

Surah Al-Ahzab in Hindi

- खुदा के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।
1. ऐ नबी खुदा ही से डरते रहो और काफिरों और मुनाफिकों की बात न मानो इसमें शक नहीं कि खुदा बड़ा वाकिफकार हकीम है।
 2. और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास जो "वही" की जाती है (बस) उसी की पैरवी करो तुम लोग जो कुछ कर रहे हो खुदा उससे यकीनी अच्छा तरह आगाह है।
 3. और खुदा ही पर भरोसा रखो और खुदा ही कारसाजी के लिए काफी है
 4. खुदा ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं पैदा किये कि (एक ही वक़्त दो इरादे कर सके) और न उसने तुम्हारी बीवियों को जिन से तुम जेहार करते हो तुम्हारी माँ बना दी और न उसने तुम्हारे लै पालकों को तुम्हारे बेटे बना दिये। ये तो फ़क़त तुम्हारी मुँह बोली बात (और जुबानी जमा खर्च) है और (चाहे किसी को बुरी लगे या अच्छी) खुदा तो सच्ची कहता है और सीधी राह दिखाता है।
 5. लै पालकों का उनके (असली) बापों के नाम से पुकारा करो यही खुदा के नज़दीक बहुत ठीक है हाँ अगर तुम लोग उनके असली बापों को न जानते हो तो तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं (उन्हें भाई या दोस्त कहकर पुकारा करो) और हाँ इसमें भूल चूक जाओ तो अलबत्ता उसका तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है मगर जब तुम दिल से जानबूझ कर करो (तो ज़रूर गुनाह है) और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।
 6. नबी तो मोमिनीन से खुद उनकी जानों से भी बढ़कर हक़ रखते हैं (क्योंकि वह गोया उम्मत के मेहरबान बाप हैं) और उनकी बीवियाँ (गोया) उनकी माँ हैं और मोमिनीन व मुहाजिरीन में से (जो लोग बाहम) कराबतदार हैं। किताबें खुदा की रूह से (गैरों की निस्बत) एक दूसरे के (तर्क के) ज्यादा हक़दार हैं मगर (जब) तुम अपने दोस्तों के साथ सुलूक करना चाहो (तो दूसरी बात है) ये तो किताबे (खुदा) में लिखा हुआ (मौजूद) है
 7. और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब हमने और पैग़म्बरों से और खास तुमसे और नूह और इबराहीम और मूसा और मरियम के बेटे ईसा से एहदो पैमाने लिया और उन लोगों से हमने सख़्त एहद लिया था

8. ताकि (क्रयामत के दिन) सच्चों (पैगम्बरों) से उनकी सच्चाई तबलीगो रिसालत का हाल दरियाफ्त करें और काफिरों के वास्ते तो उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार ही कर रखा है।
9. (ऐ ईमानदारों खुदा की) उन नेअमतों को याद करो जो उसने तुम पर नाजिल की हैं (जंगे खन्दक में) जब तुम पर (काफिरों का) लशकर (उमड़ के) आ पड़ा तो (हमने तुम्हारी मदद की) उन पर आँधी भेजी और (इसके अलावा फरिश्तों का ऐसा लशकर भेजा) जिसको तुमने देखा तक नहीं और तुम जो कुछ कर रहे थे खुदा उसे खूब देख रहा था
10. जिस वक़्त वह लोग तुम पर तुम्हारे ऊपर से आ पड़े और तुम्हारे नीचे की तरफ से भी पिल गए और जिस वक़्त (उनकी कसरत से) तुम्हारी आँखें खैरा हो गयीं थी और (खौफ से) कलेजे मुँह को आ गए थे और खुदा पर तरह-तरह के (बुरे) ख्याल करने लगे थे।
11. यहाँ पर मोमिनों का इम्तिहान लिया गया था और खूब अच्छी तरह झिंझोड़े गए थे।
12. और जिस वक़्त मुनाफेकीन और वह लोग जिनके दिलों में (कुफ़्र का) मरज़ था कहने लगे थे कि खुदा ने और उसके रसूल ने जो हमसे वायदे किए थे वह बस बिल्कुल धोखे की टट्टी था।
13. और अब उनमें का एक गिरोह कहने लगा था कि ऐ मदीने वालों अब (दुश्मन के मुकाबलें में) तुम्हारे कहीं ठिकाना नहीं तो (बेहतर है कि अब भी) पलट चलो और उनमें से कुछ लोग रसूल से (घर लौट जाने की) इजाज़त माँगने लगे थे कि हमारे घर (मर्दों से) बिल्कुल खाली (गैर महफूज़) पड़े हुए हैं - हालाँकि वह खाली (गैर महफूज़) न थे (बल्कि) वह लोग तो (इसी बहाने से) बस भागना चाहते हैं
14. और अगर ऐसा ही लशकर उन लोगों पर मदीने के एतराफ से आ पड़े और उन से फसाद (खाना जंगी) करने की दरख्वास्त की जाए तो ये लोग उसके लिए (फौरन) आ मौजूद हों
15. और (उस वक़्त) अपने घरों में भी बहुत कम तवक्कुफ़ करेंगे (मगर ये तो जिहाद है) हालाँकि उन लोगों ने पहले ही खुदा से एहद किया था कि हम दुश्मन के मुकाबले में (अपनी) पीठ न फेरेंगे और खुदा के एहद की पूछगछ तो (एक न एक दिन) होकर रहेगी
16. (ऐ रसूल उनसे) कह दो कि अगर तुम मौत का क़त्ल (के खौफ) से भागे भी तो (यह) भागना तुम्हें हरगिज़ कुछ भी मुफ़ीद न होगा और

अगर तुम भागकर बच भी गए तो बस यही न की दुनिया में चन्द रोज़ा और चैनकर लो

17. (ऐ रसूल) तुम उनसे कह दो कि अगर खुदावन्द तुम्हारे साथ बुराई का इरादा कर बैठे तो तुम्हें उसके (अज़ाब) से कौन ऐसा है जो बचाए या भलाई ही करना चाहे (तो कौन रोक सकता है) और ये लोग खुदा के सिवा न तो किसी को अपना सरपरस्त पाएँगे और न मददगार
18. तुममें से जो लोग (दूसरों को जिहाद से) रोकते हैं खुदा उनको खूब जानता है और (उनको भी खूब जानता है) जो अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि हमारे पास चले भी आओ और खुद भी (फ़क़त पीछा छुड़ाने को लड़ाई के खेत) में बस एक ज़रा सा आकर तुमसे अपनी जान चुराई
19. और चल दिए और जब (उन पर) कोई खौफ़ (का मौक़ा) आ पड़ा तो देखते हो कि (आस से) तुम्हारी तरफ़ देखते हैं (और) उनकी आँखें इस तरह घूमती हैं जैसे किसी शख्स पर मौत की बेहोशी छा जाए फिर वह खौफ़ (का मौक़ा) जाता रहा और ईमानदारों की फतेह हुयी तो माले (ग़नीमत) पर गिरते पड़ते फौरन तुम पर अपनी तेज़ ज़बानों से ताना कसने लगे ये लोग (शुरू) से ईमान ही नहीं लाए (फ़क़त ज़बानी जमा खर्च थी) तो खुदा ने भी इनका किया कराया सब अकारत कर दिया और ये तो खुदा के वास्ते एक (निहायत) आसान बात थी
20. (मदीने का मुहासेरा करने वाले चल भी दिए मगर) ये लोग अभी यही समझ रहे हैं कि (काफ़िरों के) लश्कर अभी नहीं गए और अगर कहीं (कुप्फार का) लश्कर फिर आ पहुँचे तो ये लोग चाहेंगे कि काश वह जंगलों में गँवारों में जा बसते और (वहीं से बैठे बैठे) तुम्हारे हालात दरयाफ़्त करते रहते और अगर उनको तुम लोगों में रहना पड़ता तो फ़क़त (पीछा छुड़ाने को) ज़रा ज़हूर (कहीं) लड़ते
21. (मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो खुद रसूल अल्लाह का (खन्दक में बैठना) एक अच्छा नमूना था (मगर हाँ यह) उस शख्स के वास्ते है जो खुदा और रोज़े आखेरत की उम्मीद रखता हो और खुदा की याद बाकसरत करता हो
22. और जब सच्चे ईमानदारों ने (कुप्फार के) जमघटों को देखा तो (बेतकल्लुफ़) कहने लगे कि ये वही चीज़ तो है जिसका हम से खुदा ने और उसके रसूल ने वायदा किया था (इसकी परवाह क्या है) और खुदा ने और उसके रसूल ने बिल्कुल ठीक कहा था और (इसके देखने से) उनका ईमानदार और उनकी इताअत और भी जिन्दा हो गयी

23. ईमानदारों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं कि खुदा से उन्होंने (जानिसारी का) जो एहद किया था उसे पूरा कर दिखाया गरज़ उनमें से बाज़ वह हैं जो (मर कर) अपना वक़्त पूरा कर गए और उनमें से बाज़ (हुक़मे खुदा के) मुन्तज़िर बैठे हैं और उन लोगों ने (अपनी बात) ज़रा भी नहीं बदली
24. ये इम्तेहान इसलिए था ताकि खुद सच्चे (इमानदारों) को उनकी सच्चाई की जज़ाए ख़ैर दे और अगर चाहे तो मुनाफ़ेकीन की सज़ा करे या (अगर वह लागे तौबा करें तो) खुदा उनकी तौबा कुबूल फरमाए इसमें शक नहीं कि खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है
25. और खुदा ने (अपनी कुदरत से) क़ाफ़िरों को मदीने से फेर दिया (और वह लोग) अपनी झुंझलाहट में (फिर गए) और इन्हें कुछ फायदे भी न हुआ और खुदा ने (अपनी मेहरबानी से) मोमिनीन को लड़ने की नौबत न आने दी और खुदा तो (बड़ा) ज़बरदस्त (और) ग़ालिब हैं
26. और एहले किताब में से जिन लोगों (बनी कुरैज़ा) ने उन (कुफ़फ़ार) की मदद की थी खुदा उनको उनके किलों से (बेदख़ल करके) नीचे उतार लाया और उनके दिलों में (तुम्हारा) ऐसा रोब बैठा दिया कि तुम उनके कुछ लोगों को क़त्ल करने लगे
27. और कुछ को कैदी (और गुलाम) बनाने और तुम ही लोगों को उनकी ज़मीन और उनके घर और उनके माल और उस ज़मीन (ख़ैबर) का खुदा ने मालिक बना दिया जिसमें तुमने क़दम तक नहीं रखा था और खुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर वतवाना है
28. ऐ रसूल अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम (फ़क़त) दुनियावी जिन्दगी और उसकी आराइश व ज़ीनत की ख्वाहॉ हो तो उधर आओ मैं तुम लोगों को कुछ साज़ो सामान दे दूँ और उनवाने शाइस्ता से रूख़सत कर दूँ
29. और अगर तुम लोग खुदा और उसके रसूल और आख़ेरत के घर की ख्वाहॉ हो तो (अच्छी तरह ख़याल रखो कि) तुम लोगों में से नेकोकार औरतों के लिए खुदा ने यकीनन् बड़ा (बड़ा) अज़्र व (सवाब) मुहय्या कर रखा है
30. ऐ पैग़म्बर की बीबियों तुममें से जो कोई किसी सरीही ना शाइस्ता हरकत की का मुरतिब हुयी तो (याद रहे कि) उसका अज़ाब भी दुगना बढ़ा दिया जाएगा और खुदा के वास्ते (निहायत) आसान है

31. और तुममें से जो (बीवी) खुदा और उसके रसूल की ताबेदारी अच्छे (अच्छ) काम करेगी उसको हम उसका सवाब भी दोहरा अता करेंगे और हमने उसके लिए (जन्नत में) इज़्जत की रोज़ी तैयार कर रखी है
32. ऐ नबी की बीवियों तुम और मामूली औरतों की सी तो हो वही (बस) अगर तुम को परहेज़गारी मंजूर रहे तो (अजनबी आदमी से) बात करने में नरम नरम (लगी लिपटी) बात न करो ताकि जिसके दिल में (शहवते जिना का) मजर् है वह (कुछ और) इरादा (न) करे
33. और (साफ-साफ) उनवाने शाइस्ता से बात किया करो और अपने घरों में निचली बैठी रहो और अगले ज़माने जाहिलियत की तरह अपना बनाव सिंगार न दिखाती फिरो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और (बराबर) ज़कात दिया करो और खुदा और उसके रसूल की इताअत करो ऐ (पैगम्बर के) अहले बैत खुदा तो बस ये चाहता है कि तुमको (हर तरह की) बुराई से दूर रखे और जो पाक व पाकीज़ा दिखने का हक़ है वैसा पाक व पाकीज़ा रखे
34. और (ऐ नबी की बीबियों) तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें और (अक़ल व हिकमत की बातें) पढ़ी जाती हैं उनको याद रखो कि बेशक खुदा बड़ा बारीक है वाकिफकार है
35. (दिल लगा के सुनो) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें और फरमाबरदार मर्द और फरमाबरदार औरतें और रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और फिरौतनी करने वाले मर्द और फिरौतनी करने वाली औरतें और ंरात करने वाले मर्द और ंरात करने वाली औरतें और रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले मर्द और हिफाज़त करने वाली औरतें और खुदा की बकसरत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें बेशक इन सब लोगों के वास्ते खुदा ने मग़फिरत और (बड़ा) सवाब मुहैय्या कर रखा है
36. और न किसी ईमानदार मर्द को ये मुनासिब है और न किसी ईमानदार औरत को जब खुदा और उसके रसूल किसी काम का हुक्म दें तो उनको अपने उस काम (के करने न करने) अख़तेयार हो और (याद रहे कि) जिस शख्स ने खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की वह यकीनन खुल्लम खुल्ला गुमराही में मुब्तिला हो चुका

37. और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब तुम उस शख्स (ज़ैद) से कह रहे थे जिस पर खुदा ने एहसान (अलग) किया था और तुमने उस पर (अलग) एहसान किया था कि अपनी बीबी (ज़ैनब) को अपनी ज़ौजियत में रहने दे और खुदा से डेर खुद तुम इस बात को अपने दिल में छिपाते थे जिसको (आखिरकार) खुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे हालाँकि खुदा इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उस से डरो गरज़ जब ज़ैद अपनी हाजत पूरी कर चुका (तलाक़ दे दी) तो हमने (हुक़म देकर) उस औरत (ज़ैनब) का निकाह तुमसे कर दिया ताकि आम मोमिनीन को अपने ले पालक लड़कों की बीवियों (से निकाह करने) में जब वह अपना मतलब उन औरतों से पूरा कर चुकें (तलाक़ दे दें) किसी तरह की तंगी न रहे और खुदा का हुक़म तो किया कराया हुआ (क़तई) होता है
38. जो हुक़म खुदा ने पैग़म्बर पर फ़र्ज़ कर दिया (उसके करने) में उस पर कोई मुज़ाएका नहीं जो लोग (उनसे) पहले गुज़र चुके हैं उनके बारे में भी खुदा का (यही) दस्तूर (जारी) रहा है (कि निकाह में तंगी न की) और खुदा का हुक़म तो (ठीक अन्दाज़े से) मुक़रर हुआ होता है
39. वह लोग जो खुदा के पैग़ामों को (लोगों तक जूँ का तूँ) पहुँचाते थे और उससे डरते थे और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे (फिर तुम क्यों डरते हो) और हिसाब लेने के वास्ते तो खुद काफ़ी है
40. (लोगों) मोहम्मद तुम्हारे मर्दों में से (हक़ीक़तन) किसी के बाप नहीं हैं (फिर ज़ैद की बीवी क्यों हराम होने लगी) बल्कि अल्लाह के रसूल और नबियों की मोहर (यानी ख़त्म करने वाले) हैं और खुदा तो हर चीज़ से ख़ूब वाकिफ़ है
41. ऐ ईमानवालों बाक़सरत खुदा की याद किया करो और
42. सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो
43. वह वही तो है जो खुद तुमपर दूरूद (दर्दों रहमत) भेजता है और उसके फ़रिश्ते ताकि तुमको (कुफ़र की) तारीक़ियों से निकालकर (ईमान की) रौशनी में ले जाए और खुदा ईमानवालों पर बड़ा मेहरबान है
44. जिस दिन उसकी बारगाह में हाज़िर होंगे (उस दिन) उनकी मुरादात (उसकी तरफ़ से हर किस्म की) सलामती होगी और खुदा ने तो उनके वास्ते बहुत अच्छा बदला (बेहशत) तैयार रखा है
45. ऐ नबी हमने तुमको (लोगों का) गवाह और (नेकों को बेहशत की) खुशख़बरी देने वाला और बर्दों को अज़ाब से डराने वाला

46. और खुदा की तरफ उसी के हुक्म से बुलाने वाला और (इमान व हिदायत का) रौशन चिराग बनाकर भेजा
47. और तुम मोमिनीन को खुशखबरी दे दो कि उनके लिए खुदा की तरफ से बहुत बड़ी (मेहरबानी और) बख्शिश है
48. और (ऐ रसूल) तुम (कहीं) काफिरों और मुनाफिकों की इताअत न करना और उनकी ईज़ारसानी का ख्याल छोड़ दो और खुदा पर भरोसा रखो और कारसाज़ी में खुदा काफ़ी है
49. ऐ ईमानवालों जब तुम मोमिना औरतों से (बगैर मेहर मुकर्रर किये) निकाह करो उसके बाद उन्हें अपने हाथ लगाने से पहले ही तलाक़ दे दो तो फिर तुमको उनपर कोई हक़ नहीं कि (उनसे) इद्दा पूरा कराओ उनको तो कुछ (कपड़े रूपये वगैरह) देकर उनवाने शाइस्ता से रूखसत कर दो
50. ऐ नबी हमने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी उन बीवियों को हलाल कर दिया है जिनको तुम मेहर दे चुके हो और तुम्हारी उन लौंडियों को (भी) जो खुदा ने तुमको (बगैर लड़े-भिड़े) माले गनीमत में अता की है और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी खालाओं की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आयी हैं (हलाल कर दी और हर ईमानवाली औरत (भी) हलाल कर दी) अगर वह अपने को (बगैर मेहर) नबी को दे दें और नबी भी उससे निकाह करना चाहते हों मगर (ऐ रसूल) ये हुक्म सिर्फ तुम्हारे वास्ते खास है और मोमिनीन के लिए नहीं और हमने जो कुछ (मेहर या क्रीमत) आम मोमिनीन पर उनकी बीवियों और उनकी लौंडियों के बारे में मुकर्रर कर दिया है हम खूब जानते हैं और (तुम्हारी रिआयत इसलिए है) ताकि तुमको (बीवियों की तरफ से) कोई दिक्कत न हो और खुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है
51. इनमें से जिसको (जब) चाहो अलग कर दो और जिसको (जब तक) चाहो अपने पास रखो और जिन औरतों को तुमने अलग कर दिया था अगर फिर तुम उनके ख्वाहा हो तो भी तुम पर कोई मज़ाएक़ा नहीं है ये (अख़तेयार जो तुमको दिया गया है) ज़रूर इस काबिल है कि तुम्हारी बीवियों की आँखें ठन्डी रहे और आर्जूदा खातिर न हो और वो कुछ तुम उन्हें दे दो सबकी सब उस पर राज़ी रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है खुदा उसको ख़ुब जानता है और खुदा तो बड़ा वाकिफ़कार बुर्दबार है

52. (ऐ रसूल) अब उन (नौ) के बाद (और) औरतें तुम्हारे वास्ते हलाल नहीं और न ये जायज़ है कि उनके बदले उनमें से किसी को छोड़कर और बीबियाँ कर लो अगर चे तुमको उनका हुस्न कैसा ही भला (क्यों न) मालूम हो मगर तुम्हारी लौंडियाँ (इस के बाद भी जायज़ हैं) और खुदा तो हर चीज़ का निगरा है
53. ऐ ईमानदारों तुम लोग पैग़म्बर के घरों में न जाया करो मगर जब तुमको खाने के वास्ते (अन्दर आने की) इजाज़त दी जाए (लेकिन) उसके पकने का इन्तेज़ार (नबी के घर बैठकर) न करो मगर जब तुमको बुलाया जाए तो (ठीक वक़्त पर) जाओ और फिर जब खा चुको तो (फौरन अपनी अपनी जगह) चले जाया करो और बातों में न लग जाया करो क्योंकि इससे पैग़म्बर को अज़ीयत होती है तो वह तुम्हारा लैहाज़ करते हैं और खुदा तो ठीक (ठीक कहने) से झंपता नहीं और जब पैग़म्बर की बीवियों से कुछ माँगना हो तो पर्दे के बाहर से माँगा करो यही तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के वास्ते बहुत सफाई की बात है और तुम्हारे वास्ते ये जायज़ नहीं कि रसूले खुदा को (किसी तरह) अज़ीयत दो और न ये जायज़ है कि तुम उसके बाद कभी उनकी बीवियों से निकाह करो बेशक ये खुदा के नज़दीक बड़ा (गुनाह) है
54. चाहे किसी चीज़ को तुम ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ खुदा तो (बहरहाल) हर चीज़ से यकीनी ख़ूब आगाह है
55. औरतों पर न अपने बाप दादाओं (के सामने होने) में कुछ गुनाह है और न अपने बेटों के और न अपने भाईयों के और न अपने भतीजों के और अपने भांजों के और न अपनी (किस्म कि) औरतों के और न अपनी लौंडियों के सामने होने में कुछ गुनाह है (ऐ पैग़म्बर की बीबियों) तुम लोग खुदा से डरती रहो इसमें कोई शक ही नहीं की खुदा (तुम्हारे आमाल में) हर चीज़ से वाकिफ़ है
56. इसमें भी शक नहीं कि खुदा और उसके फरिश्ते पैग़म्बर (और उनकी आल) पर दुरूद भेजते हैं तो ऐ ईमानदारों तुम भी दुरूद भेजते रहो और बराबर सलाम करते रहो
57. बेशक जो लोग खुदा को और उसके रसूल को अज़ीयत देते हैं उन पर खुदा ने दुनिया और आखेरत (दोनों) में लानत की है और उनके लिए रूसवाई का अज़ाब तैयार कर रखा है

58. और जो लोग ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतों को बगैर कुछ किए दूरे (तोहमत देकर) अज़ीयत देते हैं तो वह एक बोहतान और सरीह गुनाह का बोझ (अपनी गर्दन पर) उठाते हैं
59. ऐ नबी अपनी बीवियों और अपनी लड़कियों और मोमिनीन की औरतों से कह दो कि (बाहर निकलते वक़्त) अपने (चेहरों और गर्दनों) पर अपनी चादरों का घूँघट लटका लिया करंे ये उनकी (शराफ़त की) पहचान के वास्ते बहुत मुनासिब है तो उन्हें कोई छेड़ेगा नहीं और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है
60. ऐ रसूल मुनाफ़ेकीन और वह लोग जिनके दिलों में (कुफ़र का) मजूर है और जो लोग मदीने में बुरी ख़बरें उड़ाया करते हैं- अगर ये लोग (अपनी शरारतों से) बाज़ न आएँगे तो हम तुम ही को (एक न एक दिन) उन पर मुसल्लत कर देंगे फिर वह तुम्हारे पड़ोस में चन्द रोज़ों के सिवा ठहरने (ही) न पाएँगे
61. लानत के मारे जहाँ कहीं हत्थे चढ़े पकड़े गए और फिर बुरी तरह मार डाले गए
62. जो लोग पहले गुज़र गए उनके बारे में (भी) खुदा की (यही) आदत (जारी) रही और तुम खुदा की आदत में हरगिज़ तग़य्युर तबद्दुल न पाओगे
63. (ऐ रसूल) लोग तुमसे क़यामत के बारे में पूछा करते हैं (तुम उनसे) कह दो कि उसका इल्म तो बस खुदा को है और तुम क्या जानो शायद क़यामत करीब ही हो
64. खुदा ने क़ाफ़िरों पर यकीनन लानत की है और उनके लिए जहन्नूम को तैयार कर रखा है
65. जिसमें वह हमेशा अबदल आबाद रहेंगे न किसी को अपना सरपरस्त पाएँगे न मददगार
66. जिस दिन उनके मुँह जहन्नूम की तरफ़ फेर दिए जाएँगे तो उस दिन अफ़सोसनाक लहजे में कहेंगे ऐ काश हमने खुदा की इताअत की होती और रसूल का कहना माना होता
67. और कहेंगे कि परवरद्ग़िर हमने अपने सरदारों अपने बड़ों का कहना माना तो उन्हीं ही ने हमें गुमराह कर दिया
68. परवरद्ग़िरा (हम पर तो अज़ाब सही है मगर) उन लोगों पर दोहरा अज़ाब नाज़िल कर और उन पर बड़ी से बड़ी लानत कर

69. ऐ ईडडडनवलॉं (खडरदर कहीं) तुड लडग डी उनके से न डु डरनर डलनूडने डूसर कु तकलीड डी तु खुदर ने उनकी तुडडतुं से डूसर कु डरी कर डररर और डूसर खुदर के नडुडीक एक रवरदर (इडुडत करने वरले) (डैगडुडर) थे
70. ऐ ईडडनवलॉं खुदर से डरते रडु और (डड कडु तु) दुरुसुत डरत कडर करु
71. तु खुदर तुडुडररी कररगुडररररुं कु दुरुसुत कर देगर और तुडुडररे गुनरड डखुश देगर और डलस शखुस ने खुदर और उसके रसूल की इतररत की वड तु अपनी डुररद कु खूड अकुडी तरड डहुडुड गडर
72. डेशक डडने (रुडे अडल) अपनी अडरनत (इतररत इडरदत) कु सररे आसडरन और डडडीन डडरडुं के सरडने डेश कलरर तु उनूडने उसके (डर) उठरने से इनुकर कलरर और उससे डर गड और आदडी ने उसे (डे तरडुडल) उठर ललरर डेशक इनुसरन (अडने डक डें) डडर डरललड (और) नरदरन डै
73. इसकर नतीडर डड डुआ कल खुदर डुनरडलक डरुं और डुनरडलक औरतुं और डुशरलक डरुं और डुशरलक औरतुं कु (उनके कलड की) सडर देगर और ईडडनदरर डरुं और ईडडनदरर औरतुं की (तकूसीर अडरनत की) तुडर कुडूल डरडरडगर और खुदर तु डडर डखुशने वरलर डेडरडरन डै